05. प्रेमचंद के फटे जूते

प्र.1 हरिशंकर परसाई ने प्रेमचंद का जो शब्द-चित्र हमारे सामने प्रस्तुत किया है, उससे प्रेमचंद के व्यक्तित्व की कौन-कौन-सी विशेषताएँ उभरकर सामने आती हैं?

उत्तर: हरिशंकर परसाई ने प्रेमचंद का जो व्यक्तित्व हमारे सामने प्रस्तुत किया है, उससे प्रेमचंद के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएँ उभरकर सामने आती हैं

(i) **सादा जीवन उच्च विचार** प्रेमचंद सीधे-सादे व्यक्ति थे। वे धोती-कुर्ता, सिर पर मोटे कपड़े की टोपी व केनवस का जूता पहनते थे। उन्हें इस बात की कदापि चिंता नहीं रहती थी कि लोग क्या कहेंगे? फटे जूते से अँगुली बाहर निकली होने पर भी उन्हें किसी प्रकार की लज्जा का अनुभव नहीं होता था। इसके साथ-साथ उनके विचार बहुत ही उच्च थे। वे सामाजिक बुराइयों से दूर रहे और समाज को उचित दिशा प्रदान करने का कार्य करते रहे।

(ii) **आशावादी व आत्मविश्वासी** वे आशावादी एवं स्वयं पर विश्वास रखने वाले व्यक्ति थे। वे विकट परिस्थितियों से भी न घबराकर सदैव उनका सामना करने के लिए तत्पर रहते थे।

(iii) **स्वाभिमानी व्यक्तित्व** प्रेमचंद स्वाभिमानी व्यक्ति थे। वे दिखावा करने के लिए किसी से कोई वस्तु माँगकर प्रयोग करने के पक्षधर नहीं थे। यह बात फोटो में उनके फटे हुए जूते से भी स्पष्ट होती है।

(iv) **संघर्षशील लेखक** प्रेमचंद अपने जीवन में हमेशा संघर्ष करते रहे। उन्होंने अपने मार्ग में आने वाली चट्टानों (कठिनाइयों) को ठोकरें मारीं। इस प्रकार वे आजीवन संघर्षशील बने रहे।

प्र.2 सही कथन के सामने (✓) का निशान लगाइए

(क) बाएँ पाँव का जूता ठीक है मगर दाहिने जूते में बड़ा छेद हो गया है, जिसमें से अँगुली बाहर निकल आई है।

(ख) लोग तो इत्र चुपड़कर फोटो खिंचवाते हैं, जिससे फोटो में खुशबू आ जाए।

(ग) तुम्हारी यह व्यंग्य-मुसकान मेरे हौसले को बढ़ाती है।

(घ) जिसे तुम घृणित समझते हो, उसकी तरफ़ अँगूठे से इशारा करते हो?

उत्तर: (क) × (ख)✓ (ग) × (घ) ×

05. प्रेमचंद के फटे जूते

प्र.4 पाठ में एक जगह पर लेखक सोचता है कि "फोटो खिंचवाने की अगर यह पोशाक है, तो पहनने की कैसी होगी?" लेकिन अगले ही पल वह विचार बदलता है कि "नहीं, इस आदमी की अलग-अलग पोशाकें नहीं होंगी।" आपके अनुसार, इस संदर्भ में प्रेमचंद के बारे में लेखक के विचार बदलने की क्या वजहें हो सकती हैं?

उत्तर: प्रेमचंद के बारे में लेखक के विचार बदलने की निम्नलिखित वजह हो सकती हैं

(i) लेखक द्वारा की गई पहली टिप्पणी आधुनिक युग में परिवर्तित होती व्यक्ति की सोच को देखकर की गई है कि जिस प्रकार लोग अपने घर पर पहनने और बाहर पहनने के कपडों में अंतर करते हैं, लेकिन प्रेमचंद इस प्रकार के सभी व्यक्तियों से अलग हैं, यह बात उन्होंने बाद में सोची।

(ii) प्रेमचंद एक सीधे-सादे साधारण आदमी थे। वे दिखावे की परवाह नहीं करते थे और न यह सोचते थे कि लोग क्या कहेंगे। इसलिए पोशाक बदलने की बात उन पर लागू नहीं होती। इन्हीं कारणों से लेखक ने बाद में अपनी टिप्पणी बदल दी।

प्र.5 आपने यह व्यंग्य पढ़ा। इसे पढ़कर आपको लेखक की कौन-सी बातें आकर्षित करती हैं?

उत्तर: मुझे इस व्यंग्य रचना को पढ़कर निम्नलिखित बातें आकर्षित करती हैं

(i) लेखक की व्यंग्य शैली आकर्षक, गंभीर एवं गूढ़ अर्थ लिए हुए हैं, जो समाज की कृत्रिम एवं शोषक व्यवस्था पर प्रहार करती है।

(ii) लेखक ने अपने व्यंग्य को विस्तार से समझाया है और उनकी यह विस्तारण शैली किसी भी तरह के पाठक को लेख को समझने में सहायता करती है।

(ii) लेखक की संवाद शैली और बात से बात निकालने की प्रवृत्ति अत्यंत प्रभावी है। लेखक पूरी रचना में पाठक का लेख के साथ एक अप्रत्यक्ष संवाद स्थापित करता चलता है, जिससे पाठक की सहजता एवं रुचि दोनों बनी रहती हैं; जैसे- लेख का आरंभप्रेमचंद के फटे जूते से होता है, लेकिन वह प्रेमचंद के पूरे व्यक्तित्व को उसमें समेट लेता है।

प्र.6 पाठ में 'टीले' शब्द का प्रयोग किन संदर्भों को इंगित करने के लिए किया गया होगा?

05. प्रेमचंद के फटे जूते

उत्तर: 'टीला' शब्द रास्ते की रुकावट का प्रतीक है। पाठ में टीले शब्द का प्रयोग व्यक्ति के जीवन में आने वाली कठिनाइयों, संघर्षों एवं असुविधाओं के लिए किया गया है। अनेक बुराइयाँ, कुरीतियाँ; जैसे- शोषण, अन्याय, छुआछूत, जाति-पाँति आदि और भ्रष्ट आचरण जीवन की सहज गति को बाधित कर देते हैं।

रचना और अभिव्यक्ति

प्र.7 प्रेमचंद के फटे जूते को आधार बनाकर परसाई जी ने यह व्यंग्य लिखा है। आप भी किसी व्यक्ति की पोशाक को आधार बनाकर एक व्यंग्य लिखिए।

उत्तर: विद्यार्थी स्वयं करें।

प्र.8 आपकी दृष्टि में वेशभूषा के प्रति लोगों की सोच में आज क्या परिवर्तन आया है?

उत्तर: आजकल लोग अपनी वेशभूषा के प्रति अत्यंत सतर्क एवं आधुनिक दृष्टिकोण रखते हैं। लोगों को लगने लगा है कि वेशभूषा व्यक्तित्व की पहली छाप होती है, जो सामने वाले को प्रभावित करती है। लोग इस बात को लेकर अत्यंत संवेदनशील हो गए हैं। वेशभूषा के कारण लोगों के व्यवहार में अंतर आ जाता है। समाज के सभी वर्ग एवं समुदाय के लोग अब अपनी वेशभूषा के प्रति अत्यधिक सचेत रहते हैं तथा उसके माध्यम से सामने वाले व्यक्ति को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं।

Sources: All in One – Hindi Course 'A' by Arihant Publication

Govindo Sir – Hindi Teacher at BMSSS KNE